

Date: / /

Page No. 1

Name - Tannu

Examination Roll No - 19346200298

Sol Roll No - 19-1-16-001487

Unique Paper Code - 62314402

Title of Paper - History of India, C-1700-1950

Semester - 4 semester

Date - 17/7/2021

Mobile No - 7011928025

Ques 3 =

आधुनिक भारत के किसान आन्दोलनों के स्वरूपों पर गहरी दृष्टि डालें ?

Ans 3 =

भारतीय किसान =) भारत संरचनात्मक दृष्टि से गाँवों का देश है, और सभी ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है इसी लिए भारत को भारत कृषि प्रधान देश की संज्ञा भी मिली हुई है। लगभग 70% भारतीय लोग किसान हैं। वे भारत देश के बीड़ की हड्डी के समान हैं। खाद्य फसलों और तिलहन का उत्पादन करते हैं। वे वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन करते हैं। वे हमारे उद्योगों के लिए कुछ कच्चे माल का उत्पादन करते इसलिए वे हमारे राष्ट्र के जीवन रक्त हैं। भारत अपने लोगों की लगभग 60% कृषि पर प्रत्यक्ष

Tannu



भा पपरीक्ष कप से मिर्भर भारतीय किसान पूरे दिन और रात काम करते हैं। वह बीज बोते हैं और रात में फसलों पर नजर रखते भी हैं। वह आवारा मवेशियों के शिक्का फसलों की रखवाली करते। वह अपने बैलों का ख्याल रखते हैं।

### किसानों की हालत ⇒

भारतीय किसान गरीब हैं। उनकी गरीबी पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। किसान को दो वस्तु का खाना भी नसीब नहीं हो पाता। उन्हें मोटे कपड़े का कुछ डुकड़ा नसीब नहीं हो पाता है। वह अपने बच्चों को शिक्षा भी नहीं दे पाते। वह अपने बेटे और बेटियों का ठीक पोशाक तक खरीद कर नहीं दे पाते। वह अपनी पत्नी को गहने पहनने का खुश नहीं हो पाते। किसान की पत्नी कपड़े को कुछ डुकड़े के साथ प्रबंधित करने के लिए है। वह भी घर पर और क्षेत्र में काम करती हैं। वह गौशाला साफ करती, गाय के गोबर बनाकर दिवारी पर चिपकाती और उन्हें चूप में बूझाती। वह गोलि मानसून के महीने के दौरान ईंधन के रूप में उपयोग होता है।



पुराने किसानों की अधिकांश अनपढ़ आदि ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी लेकिन अब पीढ़ी के अधिकतर किसान शिक्षित हैं। उनके शिक्षित होने के नाते उन्हें बहुत मदद मिलती है। ये प्रयोगशाला में अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण करवा लेते हैं। इस प्रकार, वे सम्भव जाते की उनके क्षेत्रों में सबसे ज्यादा फसल किसकी होगी।

### जीवन सुधारने के उपाय

किसानों की भौग मुफ्त बिजली और पानी नहीं है, बल्कि बिजली की निबन्धिता आपूर्ति के लिए है जिसके लिये वे भुगतान करने के लिए तैयार हैं। पंपाव, जैसे राज्यों में पहली बार में हरित क्रांति से किसानों की बहुत मदद मिली लेकिन कम कीमतों में कम फसलों की उपज के कारण उनके काम में बाधाओं ने आना शुरू कर दिया। भारतीय किसानों की हालत में सुधार किया जाना चाहिए। उन्हें खेती की आधुनिक विधि सिखाया जाना चाहिए। उन्हें साक्षर बनाया जाना चाहिए। उनको पढ़ा लिखा बनाना चाहिए।

Signature



## कृषक आन्दोलन

कृषि नीति को बदलने के लिये किये गये आन्दोलन कृषक आन्दोलन कहलाते हैं।

कृषक आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है और विश्व के सभी भागों में अलग-अलग समय पर किसानों ने कृषि नीति में परिवर्तन करने के लिये आन्दोलन किये हैं ताकि उनकी दशा सुधर सके। मौजूदा दौर में भारत में कृषक आन्दोलन तेज गति से बढ़ रहे हैं इसका मुख्य कारण कृषक की आर्थिक हालत दिन प्रति दिन कमजोर हो रही है और वो कृषि के मुकड़ पाल में फँस रहा है क्योंकि मौजूदा दौर में कृषि में लागत बढ़ रही है आभूदनी घट रही है जिस कारण से किसानों में आत्म हत्या की बटनाएँ बढ़ रही हैं। दूसरी तरफ लोग कृषि नीति बदलवाने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। वर्ष 2017 में देश में छोटे बड़े संकड़ों आन्दोलन देश में हुए हैं सरकार को कृषि के सम्बन्ध में बोलने पर मजबूर किया है जिस में महाराष्ट्र का पून मीठा वन्दन हो चाने नासिक से मुम्बई तक का मार्ग है।

पं.



## किसान - सरकार संघर्ष ?

भारत सरकार और किसानों के बीच कई दूर की बातचीत के बाद भी हमने पता अपने रुख में बदलाव करने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं।

किसान तीनों एचि कानूनों को रद्द करने की मांग कर रहे हैं और सरकार ने अब तक इसी कोई संकेत नहीं दिया है कि वह तीनों कानूनों को रद्द करने की मांग को ध्यान में रखेगी।

इसमें मैं प्रश्न उठाता हूँ कि आखिर ये संघर्ष कब तक चलता रहेगा, क्योंकि गिरते तापमान और कोराना के खतरे को देखते हुए प्रदूषणकारीयों के लिए आगे के दिन बेहद चुनौती पूर्ण साबित हो सकते हैं।

बीबी बी के साथ बातचीत में उन्होंने कहा, किसान संगठनों के बीच किसी तरह की बीच का रास्ता निकालने की कोशिश नहीं हो रही है और हमें मौसम की परवाह नहीं है जहाँ तक रही कोराना

Tanuj



सबसे ज्यादा खतरनाक है हम गौरीना को  
 सैनिक लोगें लौकिक इन कानूनों को नहीं  
 सैनिक समझते हैं उन्हें निरस्त कराने के लिए  
 लड़ाई निरंतर जारी रहेगी सभी एकमत  
 हैं, सभी एकमत हैं - वही सियासी दलकों  
 में ये बात भी हो रही है कि  
 अब किसान संगठनों का करव नरम पड़ता  
 दिख रहा है।

इस पर राजिंदर सिंह ने कहा "इस तरह की  
 खबरें निराधार हैं हम अभी भी अपनी  
 माँगों पर डटे हुए हैं हम सभी भारतीय  
 भारतीय संगठनों ने सरकार के संशोधन  
 प्रस्ताव को एकमत से खारिज कर दिया  
 है हमारी माँगें अभी भी वही बनी  
 हुई हैं कि तीनों कानूनों को रद्द किया  
 जाए और समरसपी को कानूनी अधिकारी  
 बनाया जाए हमारी ये माँगें हैं और सभी  
 संगठन इन माँगों पर कायम हैं। हम अब  
 संघर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तैज करने जा  
 रहे हैं।

पिछले कुछ दिनों में समरसपी को कानूनी  
 दर्जा देने की माँग ज्यादा लोकप्रिय हो  
 चली है।

Tamam



हालांकि केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने  
 बीते गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा  
 है कि किसानों के मन में एक झंका  
 एमएसपी को लेकर है कि आने वाले  
 समय में इसका क्या होगा लेकिन  
 यह किसानों को आश्वासन दिलाना चाहते हैं  
 एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर  
 कोई असर नहीं पड़ेगा।

उन्होंने कहा, एमएसपी को नरेंद्र मोदी जी  
 के नेतृत्व में उठे गुना किया गया है  
 खरीद का वॉल्यूम भी बढ़ा है पहले गेहूँ  
 और धान पर ही खरीद होती थी  
 अब दलहन और तिलहन पर भी खरीद  
 की जा रही है एमएसपी से किसानों  
 को ज्यादा से ज्यादा सुरक्षा मिल सके  
 और उसमें हम ज्यादा पैसा खर्च कर  
 सकें, इस दृष्टि से नरेंद्र मोदी जी की  
 सरकार की प्रतिवद्धता पहले भी थी आज  
 भी है और आने वाले काल में भी रहेगी  
 एमएसपी के मामले में अगर उनके मन में  
 शका है तो हम लिखित आश्वासन देने  
 के लिए भी तैयार हैं हम सरकारी को  
 भी दे सकते हैं।

विमल



तौमर ने कहा कि हमलसपी की खरीद पर कौई असर नहीं पड़ेगा और इसके साथ ही उन्होंने कहा कि किसान संगठन या राज्य सरकार इस बारे में केंद्र सरकार से लिखित में आश्रय ले सकती हैं लेकिन पूँचूनतुम समर्थन मूल्य की कानूनी हर्षा होने की मुद्दे पर उन्होंने बात नहीं की।

ऐसे में जब किसान संगठनों के नेताओं की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई तो उन्होंने भी केंद्रीय मंत्री तौमर के अंदाज में कागज और नियमों का पिक करते हुए अपनी भाँगी और मुद्दे को जायज ठहराया।

सरकार ऐतिहासिक सौगात कह रही है, गिफ्ट देने में क्या बीच का शर-ता होता है यह शस्ता है यह सज्जा है।

खेवाध पदार्थों का मूल्य केवल भाँगी आपूर्ति से तय नहीं हो सकता गरीबी के बारे में कौन सोचेंगा, सरकार ने खेवाध पदार्थों की कीमत को बढ़ाने से बाँकने का सही फैसला किया है।

Tam



हमारी माँग बहुत स्पष्ट है, तीनों कानून निरस्त हो, लाभकारी मूल्य की गारंटी है, वाजिब दाम मिले, दाम चाहिए, दान नहीं चाहिए लीगल गारंटी के मेकनिज्म पर बात होनी चाहिए।

एमएसपी बढ़ाने से आयात बढ़ेगा, भारत में सोयाबीन का समर्थन मूल्य 38 रुपये है जबकि अंतराष्ट्रीय बाजार में उसकी कीमत 26 रुपये है। लोग सोयाबीन का तेल आयात कर रहे हैं, भारत की तेल मिलें बंद हो रही हैं, क्योंकि वह बहुत मँहगा पड़ रहा है समर्थन मूल्य बढ़ाने जाने से समस्या का समाधान नहीं होगा।

किसान की इच्छा का जीवन जीने का अधिकार है किसान की कनकम कैसे बढ़े असली सवाल यही है, वह एमएसपी से आद य जरूरी नहीं है उसके और तरीके निकाले जाने चाहिए अमेरिका में कैसे होता है, वॉल्यू एडिशन पर टेक्स लगाकर उस सरकार सब्सिडी के तौर पर दीवारा कृषि क्षेत्र में दे देनी है।

Tamru



Name - Tannu

Examination Roll No - 19346200298

SOL Roll No - 19-1-16-001487

unique Paper code - 62314402

Title of Paper History of India, C-1700-1950

Semester 4 Semester

Date - 17/7/2021

Mobile No - 7011928025

- 34-2) राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की स्थापना से जुड़ी प्रक्रियाओं की विवेचना प्रस्तुत की ?
- 35) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति के साथ 28 दिसम्बर 1885 को बॉम्बे के गोकुल दास तैजपाल संस्कृत महाविद्यालय में हुई थी। इसके संस्थापक महासचिव (जनरल सेक्रेटरी) ए ओ ह्यूम थे जिन्होंने कलकत्ते के व्योमेश चन्द्र बनर्जी को अध्यक्ष नियुक्त किया था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ⇒

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिकतर कांग्रेस के नाम से प्रख्यात, भारत के दो प्रमुख राजनीतिक दलों में से एक है,

Tannu



जिन में अन्य भारतीय जनता पार्टी है।  
 काँग्रेस की स्थापना ब्रिटिश राज में 28  
 दिसंबर 1885 में हुई थी। इसके  
 संस्थापकों 1885 में ए. ओ. ह्यूम (धिया  
 औफिकल सौसाइटी के प्रमुख सदस्य)  
 दादा भाई नौरोजी और दिनशा वाचा  
 शामिल थे। 19 वीं शदी के आखिर  
 में और शुरुआत से लेकर मध्य 20 वीं  
 शदी में काँग्रेस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम  
 में अपने 1.5 करोड़ से अधिक सदस्यों  
 और 7 करोड़ से अधिक प्रतिभागियों के  
 साथ, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरोध  
 में एक केंद्रीय भागीदार बनी।

1947 में स्वतंत्रता के बाद, काँग्रेस भारत की  
 प्रमुख राजनीतिक पार्टी बन गई। आज़ादी  
 से लेकर 2014 तक 6 आम चुनावों  
 में से काँग्रेस ने 6 में पूर्ण बहुमत  
 जीता है और 5 में सत्ताकद गठबंधन  
 का नेतृत्व किया, अंत कुल 49 वर्षों  
 तक वह केन्द्र सरकार का हिस्सा रही।  
 भारत में काँग्रेस के सात प्रधानमंत्री  
 रहे हैं। पहले जवाहर लाल नेहरू  
 (1947-1965) थे और हाल ही में



मनमोहन सिंह (2004-2014) थे। 2014 के आम चुनाव में कांग्रेस ने आज़ादी से अब तक का सबसे खराब आम चुनावी प्रदर्शन किया और 543 सदस्यीय लोक सभा में केवल 54 सीट जीती। तब से लेकर अब तक कांग्रेस कई विवाहों में घिरी हुई है।

### भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत की एक प्रमुख राजनीतिक पार्टी है, और पहले भी, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी थी। इसकी स्थापना हुई इसकी स्थापना में डॉ. बी. एम. दादाभाई नौरोजी और दिनशा वाचा ने अहम भूमिका निभाई। भारत की आज़ादी तक कांग्रेस सबसे बड़ी और प्रमुख भारतीय जन संस्था मानी जाती थी जिसका स्वतंत्रता आंदोलन में केन्द्रीय और निर्णायक प्रभाव था।

1857 की क्रांति के पश्चात् भारत में राष्ट्रीयता की भावना का उदय तो अवश्य हुआ लेकिन वह तब तक एक आन्दोलन का रूप

Tannu  
2



नहीं ले सकती थी, जब तक इसका नैतिक और संचालन करने के लिए एक संस्था मूल रूप में भारतीयों के बीच नहीं स्थापित होती। सीमाग्रह से भारतीयों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रूप में ऐसी ही संस्था मिली थी तो पहले भी छोटी-मोटी संस्थाओं का प्रादुर्भाव हो चुका था जैसे 1851 ई० में ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन तथा 1852 ई० में महाराष्ट्र नेटिव एसोसिएशन की स्थापना की गई थी। इन संस्थाओं का निर्माण होने से राजनीतिक जीवन में एक चेतना जागृत हुई। इन संस्थाओं के द्वारा नम्र भाषा में सरकार का ध्यान नियमों में संशोधन लाने के लिए आकर्षित किया जाता था, लेकिन साम्राज्यवादी अंग्रेज हमेशा इन प्रस्तावों को अनदेखा ही कर देते थे।

### कांग्रेस की स्थापना ⇒

ब्रिटिश सरकार की उपेक्षापूर्ण नीति के कारण भारतीयों ने 1857 का आन्दोलन किया और उसके बाद भारतीयों का विरोध कभी कम नहीं, चलता ही रहा,

Tammy  
-



श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस  
ने 1876 ई. में इंडियन एसोसिएशन  
नामक एक संस्था की स्थापना की, उसके  
बाद पूना में एक "सार्वजनिक सभा" नामक  
संस्था का निर्माण किया भारतीय आन्दोलन  
प्रतिदिन शक्तिशाली हो रहा था। A.O. Hume  
ने 1883 ई. में कलकत्ता विश्वविद्यालय  
के स्ट्रिको के नाम एक पत्र प्रकाशित  
किया, जिसमें भारत के सामाजिक, नैतिक  
एवं राजनीतिक उत्पादन के लिए एक  
संगठन बनाने की अपील की गई थी।  
A.O. Hume के प्रयास ने भारतवासियों को  
प्रभावित किया और राष्ट्रीय नेताओं  
तथा सरकार के उच्च पदाधिकारियों से विचार  
विमर्श के पश्चात् Hume ने "इंडियन  
नैशनल अूनियन" की स्थापना की।

बाद में बंगाल में नेशनल लीग "महास में  
"महाजन सभा" और बम्बई में प्रेसीडेसी  
एसोसिएशन की स्थापना इसी क्रम में  
की गयी इसके बाद Hume बंगलूर गए  
और वहाँ ब्रिटिश प्रेस तथा सांसदों से  
वात्सीत कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की  
स्थापना की पृष्ठभूमि तैयार कर ली।



कांग्रेस (INC) का प्रथम अधिवेशन 28 दिसम्बर, 1885 ई. को बम्बई में हुआ जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।

1890 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रथम महिला स्नातक का सम्बन्धी गाँगुली ने कांग्रेस को संबोधित किया इसके उपरान्त संगठन में महिला भागीदारी हमेशा बढ़ती ही गई।

इस प्रकार कांग्रेस के कंफ में भारतीयों को एक माध्यम मिल गया जो स्वतंत्रता की लड़ाई में उनका नेतृत्व करता रहा राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम चरण 1885 से 1905 तक का उदारवादी युग के नाम से पुकारा जाता था।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक उद्देश्य

प्रारम्भ में कांग्रेस का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना था अथवा राष्ट्रीयता को माध्यम से सुधार लाना था। कांग्रेस के प्रारंभिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं। —



- i) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय हित के काम में संलग्न व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता और मित्रता बढ़ाना !
  - ii) देशवासियों के बीच मित्रता और सहानुभूति का सम्बन्ध स्थापित करना तथा धर्म, वंश, जाति या प्रांतीय विद्वेष को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता का विकास एवं सुदृढ़ीकरण करना ।
  - iii) महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सामाजिक प्रश्नों पर भारत के प्रमुख नागरिकों के बीच चर्चा एवं उनके सम्बन्ध में प्रमाणों का लेख तैयार करना ।
  - iv) अविष्य के राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा सुनिश्चित करना ।
  - v) राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक सुदृढ़ शिक्षित वर्गों को एकजुट करना ।
- ★ पार्टी के पार्टी के अध्यक्षों की सूची / अधिवेशनों
- लोमेशचन्द्र बनर्जी - 29 दिसंबर 1844 - 1906 - 1885



दादा भाई नौरोजी - 4 सितंबर 1825 - 1917 1886 कलकत्ता  
बृकडीन तैयबजी - 10 अक्टूबर 1844 - 1906 1887 महास  
जोषी मूल - 1829 - 1892 - अलाहाबाद  
विलियम वंडरबर्न - 838 - 1918 - 1889 धम्बई

⇒ सैफती वाल्व श्योरी ⇒

सैफती वाल्व श्योरी का रिश्ता सर्वप्रथम लाला लजपत राय ने अपनी पत्र "यंग इंडिया" में प्रस्तुत किया, गरमपंथी नेता लाला लजपत राय द्वारा 1916 में युंग इंडिया में प्रकाशित अपने एक लेख के माध्यम सुरक्षा वाल्व की परिकल्पना करते हुए कांग्रेस द्वारा ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध अपनाई गई नरमपंथी शैली पर प्रहार किया और संगठन को लॉर्ड इफरिन्ग के दिमाग की उपज बताया गया इन्हीं संगठन की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य भारतवासियों को राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाने के स्थान ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की रक्षा और उस आसन खतरी से बचना बताया, उनका कहना था कि कांग्रेस ब्रिटिश वायसराय के प्रोत्साहन ब्रिटिश हितों के लिए स्थापित एक संस्था जो भारतीयों का प्रतिनिधित्व नहीं करती।



⇒ भारत की राष्ट्रीय संस्था

अधिकांश विद्वानों का मत है कि कांग्रेस की स्थापना भारत की राष्ट्रीय नैतृता का स्वाभाविक विकास था इन विद्वानों का मानना है कि घूस पर सुरक्षा नली का आरोप लगाना तथा उसे साम्राज्यवादी रक्षक के रूप में चित्रित करना उचित नहीं है वह एक उदारवादी व्यक्ति था और भारतीयों के प्रति उसने आरम्भ से ही मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया था इसलिए इन्होंने भारतीयों के हितार्थ एक राष्ट्रीय संगठन का सुझाव दिया था।

कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन :-

मार्च 1885 में प्रथम के इंग्लैंड से भारत लौटने पर निश्चय किया गया कि आगामी कुछ दिनों की छुट्टियों में देश के सभी भागों के प्रतिनिधियों की एक सभा पुना में बुलाई जाये।

२२ से ३१ दिसम्बर 1885 तक पुना में इंडियन नेशनल यूनियन की एक सभा होगी।